Resource: Open Hindi Contemporary Version

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Revelation 1:1

1 मसीह येशु का प्रकाशन, जिसे परमेश्वर ने उन पर इसलिये
प्रकट किया कि वह अपने दासों पर उन घटनाओं का
प्रकाशन करें जिनका जल्द ही घटित होना तय है. इसे
परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत के माध्यम से अपने दास योहन को
पहुंचाया.

2 योहन प्रमाणित करते हैं कि वह सब, जो उन्होंने देखा है,
परमेश्वर की ओर से दिया गया संदेश तथा मसीह येशु के साक्षी
है.

3 धन्य है वह, जो इस भविष्यवाणी को पढ़ता है तथा वे सब, जो
इस भविष्यवाणी को सुनते हैं तथा इसमें लिखी हुई बातों का
पालन करते हैं क्योंकि इसके पूरा होने का समय निकट है.

4 योहन की ओर से, उन सात कलीसियाओं को, जो आसिया
प्रदेश में हैं, तुम्हें उनकी ओर से अनुग्रह और शांति मिले, जो
हैं, जो सर्वदा थे और जो आनेवाले हैं और सात आत्माओं की
ओर से, जो उनके सिंहासन के सामने हैं,

5 तथा मसीह येशु की ओर से, जो विश्वासयोग्य गवाह, मरे हुओं
से जी उठनेवालों में पहलौठे तथा पृथ्वी के राजाओं के हाकिम
हैं. जो हमसे प्रेम करते हैं तथा जिन्होंने अपने लहू द्वारा हमें
हमारे पापों से छुड़ाया

6 और हमें अपनी प्रजा, अपने परमेश्वर और पिता के सामने
पुरोहित होने के लिए चुना, गौरव तथा अधिकार सदा-सर्वदा
होती रहे, आमेन!

7 "याद रहे, वह बादलों में आ रहे हैं. हर एक आंख उन्हें
देखेगी—जिन्हें उन्होंने बेधा है." पृथ्वी के सभी मनुष्य "उनके
लिए विलाप करेंगे." सच यही है! आमेन.

8 "सर्वशक्तिमान, जो है, जो हमेशा से था तथा जो आनेवाला
है," प्रभु परमेश्वर का वचन है, "अल्फ़ा और ओमेगा मैं ही हूं."

9 मैं योहन, मसीह में तुम्हारा भाई तथा मसीह येशु के लिए
दुःख सहने, परमेश्वर के राज्य की नागरिकता तथा लगातार
कोशिश करने में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के संदेश के
प्रचार के कारण मसीह येशु के गवाह के रूप में मैं पतमॉस
नामक द्वीप में भेज दिया गया था.

10 प्रभु के दिन आत्मा में ध्यानमग्न की अवस्था में मुझे अपने
पीछे तुरही के ऊंचे शब्द के समान यह कहता सुनाई दिया,

11 "जो कुछ तुम देख रहे हो, उसे लिखकर इन सात
कलीसियाओं को भेज दो: इफ़ेसॉस, स्मुरना, पेरगामॉस,
थुआतेइरा, सारदेइस, फ़िलादेलफ़िया और लाओदीकेइया."

12 यह देखने के लिए कि कौन मुझसे बातें कर रहा है, मैं पीछे
मुड़ा. पीछे मुड़ने पर मुझे सात सोने के दीवट दिखाई दिए

13 और मैंने दीपदानों के बीच "मनुष्य के पुत्र," के समान एक
पुरुष को पैरों तक लंबा वस्त्र तथा छाती पर सोने का पटुका
बांधे हुए देखा.

14 उनका सिर और बाल ऊन के समान सफ़ेद हिम जैसे
उजले, आंख आग की ज्वाला से,

15 पैर भट्टी में तपा कर चमकाए हुए कांसे की तरह तथा
उनका शब्द प्रचंड लहरों की गर्जन-सा था.

16 वह अपने दाएं हाथ में सात तारे लिए हुए थे. उनके मुंह से
तेज दोधारी तलवार निकली हुई थी. उनका चेहरा दोपहर के
सूर्य जैसे चमक रहा था.

17 उन्हें देख मैं उनके चरणों पर मरा हुआ सा गिर पड़ा. उन्होंने
अपना दायां हाथ मुझ पर रखकर कहा: "डरो मत. पहला और
अंतिम मैं ही हूं.

18 और जीवित मैं ही हूं; मैं मृत था किंतु देखो, अब मैं हमेशा
के लिए जीवित हूं. मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे
अधिकार में हैं.

19 "इसलिये तुमने जो देखा है, जो इस समय घट रहा है और
जो इसके बाद घटने पर है, उसे लिख लेना.

20 इन सात तारों का, जो तुम मेरे दाएं हाथ में देख रहे हो तथा
सात सोने के दीवटों का गहरा अर्थ यह है: ये सात तारे सात
कलीसियाओं को भेजे हुए दूत तथा सात दीपदान सात
कलीसियाएं हैं.

Revelation 2:1

1 "इफ़ेसॉस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को
लिखो: जो अपने दाएं हाथ में साथ तारे लिए हुए है तथा जो
सात सोने के दीवटों के बीच चल रहा है, उसका कहना यह है:

2 मैं तुम्हारे कामों, तुम्हारे परिश्रम तथा तुम्हारे धीरज से भली-
भांति परिचित हूं और यह भी जानता हूं कि बुराई तुम्हारे लिए
असहनीय हैं. तुमने उनके दावों को, जो स्वयं को प्रेरित कहते
तो हैं, किंतु हैं नहीं, परखा और झूठा पाया

3 और यह भी कि तुम धीरज धरे रहे. तुम मेरे नाम के लिए
दुःख सहते रहे, किंतु तुमने हार स्वीकार नहीं की.

4 परंतु तुम्हारे विरुद्ध मुझे यह कहना है कि तुममें वह प्रेम नहीं
रहा, जो पहले था.

5 याद करो कि तुम कहां से कहां आ गिरे हो. इसलिये पश्चाताप
करो और वही करो जो तुम पहले किया करते थे; नहीं तो,
अगर तुम पश्चाताप न करोगे तो मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हारा
दीपदान उसके नियत स्थान से हटा दूंगा.

6 हां, तुम्हारे विषय में प्रशंसा के योग्य सच्चाई ये है कि तुम भी
निकोलॉस के शिष्यों के स्वभाव से घृणा करते हो, जिससे मैं
भी घृणा करता हूं.

7 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र
आत्मा का संबोधन क्या है. जो विजयी होगा, उसे मैं जीवन के
पेड़ में से, जो परमेश्वर के परादीस (स्वर्गलोक) में है, खाने के
लिए दूंगा.

8 "स्मुरना नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो:
जो पहला और अंतिम है, जिसकी मृत्यु ज़रूर हुई किंतु अब
वह जीवित है, उसका कहना यह है:

9 मैं तुम्हारी पीड़ा और कंगाली से परिचित हूं—किंतु वास्तव
में तुम धनी हो! मैं उनके द्वारा तुम्हारे लिए इस्तेमाल अपशब्दों
से भी परिचित हूं, जो स्वयं को यहूदी कहते तो हैं किंतु हैं नहीं.
वे शैतान का सभागृह हैं.

10 तुम पर जो कष्ट आने को हैं उनसे भयभीत न होना. सावधान
रहो: शैतान तुममें से कुछ को कारागार में डालने पर है कि
तुम परखे जाओ. तुम्हें दस दिन तक ताड़ना दी जाएगी. अंतिम
सांस तक सच्चे बने रहना और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट प्रदान
करूंगा.

11 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र
आत्मा का कहना क्या है. जो विजयी होगा, उस पर दूसरी मृत्यु
का कोई प्रहार न होगा.

12 "पेरगामॉस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को
लिखो: जिसके पास तेज दोधारी तलवार है, उसका कहना यह
है.

13 मैं जानता हूं कि तुम्हारा घर कहां है—जहां शैतान का
सिंहासन है—फिर भी मेरे नाम के प्रति तुम्हारी सच्चाई बनी
रही और तुमने मेरे प्रति अपने विश्वास का त्याग नहीं किया—
उस समय भी, जब मेरे गवाह, मेरे विश्वासयोग्य अन्तिपास की
तुम्हारे नगर में, जहां शैतान का घर है, हत्या कर दी गई.

14 किंतु मुझे तुम्हारे विरुद्ध कुछ कहना है तुम्हारे यहां कुछ
व्यक्ति हैं, जो बिलआम की शिक्षा पर अटल हैं, जिसने राजा
बालाक को इस्राएलियों को भरमाने के लिए, मूर्तियों को भेंट
वस्तुएं खाने तथा वेश्यागामी के लिए उकसाया.

15 तुम्हारे यहां भी कुछ ऐसे ही व्यक्ति हैं, जिनकी जीवनशैली
निकोलॉस के शिष्यों के समान है.

16 इसलिये पश्चाताप करो. नहीं तो मैं जल्द ही तुम्हारे पास
आकर उस तलवार से, जो मेरे मुख में है, उससे युद्ध करूंगा.

17 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र
आत्मा का कहना क्या है. जो विजयी होगा, मैं उसे गुप्त रखे
गए मन्ना में से दूंगा तथा एक सफेद पत्थर भी, जिस पर एक
नया नाम उकेरा हुआ होगा, जिसे उसके अलावा, जिसने उसे
प्राप्त किया है, अन्य कोई नहीं जानता.

18 "थुआतेइरा नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को
लिखो: परमेश्वर के पुत्र का, जिसकी आंखें अग्नि ज्वाला समान
तथा पैर भट्टी तपा कर चमकाए गए कांसे के समान हैं, कहना
यह है.

19 मैं तुम्हारे कामों, तुम्हारे प्रेम, विश्वास, सेवकाई तथा धीरज
को जानता हूं तथा इसे भी कि तुम अब पहले की तुलना में
अधिक काम कर रहे हो.

20 किंतु मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है: तुम उस स्त्री ईजेबेल
को अपने बीच रहने दे रहे हो, जो स्वयं को भविष्यवक्ता कहते
हुए मेरे दासों को गलत शिक्षा देती तथा उन्हें मूर्तियों को भेंट
वस्तुएं खाने तथा वेश्यागामी के लिए उकसाती है.

21 मैंने उसे पश्चाताप करने का समय दिया किंतु वह अपने
व्यभिचारी कामों का पश्चाताप करना नहीं चाहती.

22 इसलिये देखना, मैं उसे बीमारी के बिस्तर पर डाल दूंगा
और उन्हें, जो उसके साथ व्यभिचार में लीन हैं, घोर कष्ट में
डाल दूंगा—यदि वे उसके साथ के दुष्कर्मों से मन नहीं
फिराते.

23 इसके अलावा मैं महामारी से उसकी संतान को नाश कर
दूंगा, तब सभी कलीसियाओं को यह मालूम हो जाएगा कि जो
मन और हृदय की थाह लेता है, मैं वही हूं तथा मैं ही तुममें हर
एक को उसके कामों के अनुसार फल देनेवाला हूं.

24 किंतु थुआतेइरा के शेष लोगों के लिए, जो इस शिक्षा से
सहमत नहीं हैं तथा जो शैतान के कहे हुए गहरे भेदों से
अनजान हैं, मेरा संदेश यह है, 'मैं तुम पर कोई और बोझ न
डालूंगा.

25 फिर भी मेरे आने तक उसे, जो इस समय तुम्हारे पास है,
सुरक्षित रखो.'

26 जो विजयी होगा तथा अंत तक मेरी इच्छा पूरी करेगा, मैं
उसे राष्ट्रों पर अधिकार प्रदान करूंगा.

27 वह उन पर लोहे के राजदंड से शासन करेगा और वे मिट्टी
के पात्रों के समान चकनाचूर हो जाएंगे ठीक जैसे मुझे यह
अधिकार अपने पिता से मिला है.

28 मैं उसे भोर के तारे से सुशोभित करूंगा.

29 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र
आत्मा का कहना क्या है.

Revelation 3:1

1 "सारदेइस नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को
लिखो: जो परमेश्वर की सात आत्माओं का, जो उनकी सेवा में
है, हाकिम है तथा जो सात तारे लिए हुए है, उसका कहना यह
है: मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं. तुम कहलाते तो हो जीवित,
किंतु वास्तव में हो मरे हुए!

2 इसलिये सावधान हो जाओ! तुममें जो कुछ बाकी है, वह भी
मृतक समान है, उसमें नए जीवन का संचार करो क्योंकि मैंने
अपने परमेश्वर की दृष्टि में तुम्हारे अन्य कामों को अधूरा पाया
है.

3 इसलिये याद करो कि तुमने क्या शिक्षा प्राप्त की तथा तुमने
क्या सुना था. उसका पालन करते हुए पश्चाताप करो; किंतु
यदि तुम न जागे तो मैं चोर के समान आऊंगा—तुम जान भी
न पाओगे कि मैं कब तुम्हारे पास आ पहुंचूंगा.

4 सारदेइस नगर की कलीसिया में अभी भी कुछ ऐसे व्यक्ति
हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र अधर्म से अशुद्ध नहीं किए. वे सफ़ेद
वस्त्रों में मेरे साथ चलने योग्य हैं.

5 जो विजयी होगा, उसे मैं सफ़ेद वस्त्रों में सुसज्जित करूंगा.
मैं उसका नाम जीवन के पुस्तक में से न मिटाऊंगा. मैं उसका

नाम अपने पिता के सामने तथा उनके स्वर्गदूतों के सामने संबोधित करूंगा.

6 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का कहना क्या है.

7 "फ़िलादेलफ़िया नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: वह, जो पवित्र है, जो सच है, जिसके पास दावीद की कुंजी है, जो वह खोलता है, उसे कोई बंद नहीं कर सकता, जो वह बंद करता है, उसे कोई खोल नहीं सकता, उसका कहना यह है.

8 मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं. ध्यान दो कि मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता. मैं जानता हूं कि तुम्हारी शक्ति सीमित है फिर भी तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया है और मेरे नाम को अस्वीकार नहीं किया.

9 सुनो! जो शैतान की सभा के हैं और स्वयं को यहूदी कहते हैं, किंतु हैं नहीं, वे झूठे हैं. मैं उन्हें मजबूर करूंगा कि वे आएं तथा तुम्हारे पावों में अपने सिर झुकाएं और यह जान लें कि मैंने तुमसे प्रेम किया है.

10 इसलिये कि तुमने मेरी धीरज रूपी आज्ञा का पालन किया है, मैं भी उस विपत्ति के समय, जो पृथ्वी के सभी निवासियों पर उन्हें परखने के लिए आने पर है, तुम्हारी रक्षा करूंगा.

11 मैं शीघ्र आ रहा हूं. जो कुछ तुम्हारे पास है, उस पर अटल रहो कि कोई तुम्हारा मुकुट छीनने ना पाए.

12 जो विजयी होगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मंदिर का मीनार बनाऊंगा. वह वहां से कभी बाहर ना जाएगा. मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, अपने परमेश्वर के नगर, नए येरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरने वाला है तथा अपना नया नाम अंकित करूंगा.

13 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का कहना क्या है.

14 "लाओदीकेइया नगर की कलीसिया के लिए चुने हुए दूत को लिखो: जो आमेन, विश्वासयोग्य, सच्चा गवाह और परमेश्वर की सृष्टि का आधार है, उसका कहना यह है:

15 मैं तुम्हारे कामों से परिचित हूं—तुम न तो ठंडे हो और न गर्म—उत्तम तो यह होता कि तुम ठंडे ही होते या गर्म ही.

16 इसलिये कि तुम कुनकुने हो; न गर्म, न ठंडे, मैं तुम्हें अपने मुख से उगलने पर हूं.

17 तुम्हारा तो यह दावा है, मैं धनी हूं, मैं समृद्ध हो गया हूं तथा मुझे कोई कमी नहीं है, किंतु तुम नहीं जानते कि वास्तव में तुम तुच्छ, अभागे, अंधे तथा नंगे हो.

18 तुम्हारे लिए मेरी सलाह है कि तुम मुझसे आग में शुद्ध किया हुआ सोना मोल लो कि तुम धनवान हो जाओ; मुझसे सफ़ेद वस्त्र लेकर पहन लो कि तुम अपने नंगेपन की लज्जा को ढांप सको. मुझसे सुर्मा लेकर अपनी आंखों में लगाओ कि तुम्हें दिखाई देने लगे.

19 अपने सभी प्रेम करनेवालों को मैं ताड़ना देता तथा अनुशासित करता हूं. इसलिये बहुत उत्साहित होकर पश्चाताप करो.

20 सुनो! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता रहा हूं. यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, मैं उसके घर में प्रवेश करूंगा तथा मैं उसके साथ और वह मेरे साथ भोजन करेगा.

21 जो विजयी होगा, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का अधिकार दूंगा—ठीक जैसे स्वयं मैंने विजय प्राप्त की तथा अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर आसीन हुआ.

22 जिसके कान हों, वह सुन ले कि कलीसियाओं से पवित्र आत्मा का क्या कहना है."

Revelation 4:1

1 इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है. तब तुरही की आवाज के समान वह शब्द, जो मैंने पहले सुना था, मुझे संबोधित कर रहा था, "मेरे पास यहां ऊपर आओ कि मैं

तुम्हें वह सब दिखाऊं, जिसका इन सबके बाद घटित होना
तय है."

2 उसी क्षण ही मैं आत्मा में ध्यानमग्न की अवस्था में आ गया.
मैंने स्वर्ग में एक सिंहासन पर किसी को बैठे देखा.

3 वह, जो सिंहासन पर बैठा था, उसकी चमक सूर्यकांत मणि
तथा माणिक्य के समान थी तथा सिंहासन के चारों ओर
मेघधनुष के समान पन्ना की चमक थी.

4 उस सिंहासन के चारों ओर गोलाई में चौबीस सिंहासन थे.
उन सिंहासनों पर सफ़ेद वस्त्रों में, सोने का मुकुट धारण किए
हुए चौबीस प्राचीन बैठे थे.

5 उस सिंहासन से बिजली की कौंध, गड़गड़ाहट तथा बादलों
के गर्जन की आवाज निकल रही थी. सिंहासन के सामने सात
दीपक जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्मा हैं.

6 सिंहासन के सामने बिल्लौर के समान पारदर्शी कांच का
समुद्र था. बीच के सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी थे, जिनके
आगे की ओर तथा पीछे की ओर में आंखें ही आंखें थी.

7 पहला प्राणी सिंह के समान, दूसरा प्राणी बैल के समान,
तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य के समान तथा चौथा प्राणी उड़ते
हुए गरुड़ के समान था.

8 इन चारों प्राणियों में प्रत्येक के छः-छः पंख थे. उनके अंदर
की ओर तथा बाहर की ओर आंखें ही आंखें थी. दिन-रात
उनकी बिना रुके स्तुति-प्रशंसा यह थी: "पवित्र, पवित्र, पवित्र,
प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर! जो थे, जो हैं और जो आनेवाले
हैं."

9 जब-जब ये प्राणी उनका, जो सिंहासन पर आसीन हैं, जो
सदा-सर्वदा जीवित हैं, स्तुति करते, सम्मान करते तथा उनके
प्रति धन्यवाद प्रकट करते हैं,

10 वे चौबीस प्राचीन भूमि पर गिरकर उनका, जो सिंहासन पर
बैठे हैं, साष्टांग प्रणाम करते तथा उनकी आराधना करते हैं,
जो सदा-सर्वदा जीवित हैं. वे यह कहते हुए अपने मुकुट उन्हें
समर्पित कर देते हैं:

11 "हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर, आप ही स्तुति, सम्मान तथा
सामर्थ्य के योग्य हैं, क्योंकि आपने ही सब कुछ बनाया, तथा
आपकी ही इच्छा में इन्हें बनाया गया तथा इन्हें अस्तित्व प्राप्त
हुआ."

Revelation 5:1

1 जो सिंहासन पर बैठे थे, उनके दाएं हाथ में मैंने एक पुस्तक
देखी, जिसके पृष्ठों पर दोनों ओर लिखा हुआ था, तथा जो सात
मोहरों द्वारा बंद की हुई थी.

2 तब मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को देखा, जो ऊंचे शब्द
में यह घोषणा कर रहा था, "कौन है वह, जिसमें यह योग्यता है
कि वह इन मोहरों को तोड़ सके तथा इस पुस्तक को खोल
सके?"

3 न तो स्वर्ग में, न पृथ्वी पर और न ही पृथ्वी के नीचे कोई इस
योग्य था कि इस पुस्तक को खोल या पढ़ सके.

4 मेरी आंखों से आंसू बहने लगे क्योंकि कोई भी ऐसा योग्य न
निकला, जो इस पुस्तक को खोल या पढ़ सके.

5 तब उन पुरनियों में से एक ने मुझसे कहा, "बंद करो यह
रोना! देखो, यहूदाह गोत्र का वह सिंह, दावीद वंश का मूल
विजयी हुआ है कि वही इन सात मोहरों को तोड़े. वही इस
पुस्तक को खोलने में सामर्थ्यी है."

6 तब मैंने एक मेमने को, मानो जिसका वध बलि के लिए कर
दिया गया हो, सिंहासन, चारों प्राणियों तथा पुरनियों के बीच
खड़े हुए देखा, जिसके सात सींग तथा सात आंखें थी, जो सारी
पृथ्वी पर भेजे गए परमेश्वर की सात आत्मा हैं.

7 मेमने ने आगे बढ़कर, उनके दाएं हाथ से, जो सिंहासन पर
विराजमान थे, इस पुस्तक को ले लिया.

8 जब उसने पुस्तक ली तो चारों प्राणी तथा चौबीसों प्राचीन
उस मेमने के सामने नतमस्तक हो गए. उनमें से प्रत्येक के
हाथ में वीणा तथा धूप—पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं—से भरे
सोने के बर्तन थे.

9 वे यह नया गीत गा रहे थे: “आप ही पुस्तक लेकर इसकी
मोहरें खोलने के योग्य हैं. आपका वध बलि के लिए किया गया,
तथा आपने अपने लहू द्वारा हर एक गोत्र, भाषा, जन तथा राष्ट्रों
से मनुष्यों को परमेश्वर के लिए मोल लिया है.

10 आपने उन्हें परमेश्वर की प्रजा बनाया तथा परमेश्वर की सेवा
के लिए पुरोहित ठहराया है. वे इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे.”

11 तब मैंने अनेकों स्वर्गदूतों का शब्द सुना, ये स्वर्गदूत
अनगिनत थे—हज़ारों और हज़ारों. ये स्वर्गदूत सिंहासन, चारों
प्राणियों तथा पुरनियों के चारों ओर खड़े हुए थे.

12 वे स्वर्गदूत ऊंचे शब्द में यह गा रहे थे: “वह मेमना, जिसका
वध किया गया, सामर्थ्य, वैभव, ज्ञान, शक्ति, आदर, महिमा
और स्तुति का अधिकारी है.”

13 इसी प्रकार मैंने सारी सृष्टि—स्वर्ग में, इस पृथ्वी पर तथा इस
पृथ्वी के नीचे, समुद्र तथा उसमें बसी हुई हर एक वस्तु को यह
कहते सुना: “मेमने का तथा उनका, जो सिंहासन पर बैठे हैं,
स्तुति, आदर, महिमा तथा प्रभुता, सदा-सर्वदा रहे.”

14 चारों प्राणियों ने कहा, “आमेन” तथा पुरनियों ने दंडवत
होकर आराधना की.

Revelation 6:1

1 तब मैंने मेमने को सात मोहरों में से एक को तोड़ते देखा तथा
उन चार प्राणियों में से एक को गर्जन से शब्द में यह कहते
सुना: “आओ!”

2 तभी वहां मुझे एक घोड़ा दिखाई दिया, जो सफ़ेद रंग का था.
उसके हाथ में, जो घोड़े पर बैठा हुआ था, एक धनुष था. उसे
एक मुकुट पहनाया गया और वह एक विजेता के समान
विजय प्राप्त करने निकल पड़ा.

3 जब उसने दूसरी मोहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को यह
कहते सुना: “यहां आओ!”

4 तब मैंने वहां एक अन्य घोड़े को निकलते हुए देखा, जो आग
के समान लाल रंग का था. उसे, जो उस पर बैठा हुआ था, एक
बड़ी तलवार दी गई थी तथा उसे पृथ्वी पर से शांति उठा लेने
की आज्ञा दी गई कि लोग एक दूसरे का वध करें.

5 जब उसने तीसरी मोहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को यह
कहते हुए सुना: “यहां आओ!” तब मुझे वहां एक घोड़ा दिखाई
दिया, जो काले रंग का था. उसके हाथ में, जो उस पर बैठा
हुआ था, एक तराज़ू था.

6 तब मैंने मानो उन चारों प्राणियों के बीच से यह शब्द सुना,
“एक दिन की मज़दूरी का एक किलो गेहूं, एक दिन की
मज़दूरी का तीन किलो जौ, किंतु तेल और दाखरस की हानि
न होने देना.”

7 जब उसने चौथी मोहर खोली, तब मैंने चौथे प्राणी को यह
कहते हुए सुना “यहां आओ!”

8 तब मुझे वहां एक घोड़ा दिखाई दिया, जो गंदले हरे रंग का
था. जो उस पर बैठा था, उसका नाम था मृत्यु. अधोलोक
उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था. उसे पृथ्वी के एक चौथाई
भाग को तलवार, अकाल, महामारी तथा जंगली पशुओं द्वारा
नाश करने का अधिकार दिया गया.

9 जब उसने पांचवीं मोहर तोड़ी तो मैंने वेदी के नीचे उनकी
आत्माओं को देखा, जिनका परमेश्वर के वचन के कारण तथा
स्वयं उनमें दी गई गवाही के कारण वध कर दिया गया था.

10 वे आत्माएं ऊंचे शब्द में पुकार उठीं, “कब तक, सबसे
महान प्रभु! सच पर चलनेवाले और पवित्र! आप न्याय शुरू
करने के लिए कब तक ठहरे रहेंगे और पृथ्वी पर रहनेवालों
से हमारे लहू का बदला कब तक न लेंगे?”

11 उनमें से प्रत्येक को सफ़ेद वस्त्र देकर उनसे कहा गया कि
वे कुछ और प्रतीक्षा करें, जब तक उनके उन सहकर्मियों और
भाई बहनों की तय की गई संख्या पूरी न हो जाए, जिनकी
हत्या उन्हीं की तरह की जाएगी.

12 मैंने उसे छठी मोहर तोड़ते हुए देखा. तभी एक भीषण
भूकंप आया. सूर्य ऐसा काला पड़ गया, जैसे बालों से बनाया
हुआ कंबल और पूरा चंद्रमा ऐसा लाल हो गया जैसे लहू.

13 तारे पृथ्वी पर ऐसे आ गिरे जैसे आंधी आने पर कच्चे अंजीर
भूमि पर आ गिरते हैं.

14 आकाश फटकर ऐसा हो गया जैसे चमड़े का पत्र लिपट
जाता है. हर एक पहाड़ और द्वीप अपने स्थान से हटा दिये गये.

15 तब पृथ्वी के राजा, महापुरुष, सेनानायक, सम्पन्न तथा
बलवंत, सभी दास तथा स्वतंत्र व्यक्ति गुफाओं तथा पहाड़ों के
पत्थरों में जा छिपे,

16 वे पहाड़ों तथा पत्थरों से कहने लगे, "हम पर आ गिरो और
हमें मेमने के क्रोध से बचा लो तथा उनकी उपस्थिति से छिपा
लो, जो सिंहासन पर बैठे हैं,

17 क्योंकि उनके क्रोध का भयानक दिन आ पहुंचा है और
कौन इसे सह सकेगा?"

Revelation 7:1

1 इसके बाद मैंने देखा कि चार स्वर्गदूत पृथ्वी के चारों कोनों
पर खड़े हुए पृथ्वी की चारों दिशाओं का वायु प्रवाह रोके हुए
हैं कि न तो पृथ्वी पर वायु प्रवाहित हो, न ही समुद्र पर और न
ही किसी पेड़ पर.

2 मैंने एक अन्य स्वर्गदूत को पूर्वी दिशा में ऊपर की ओर आते
हुए देखा, जिसके अधिकार में जीवित परमेश्वर की मोहर थी,
उसने उन चार स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी तथा समुद्र को नाश
करने का अधिकार दिया गया था,

3 ऊंचे शब्द में पुकारते हुए कहा, "न तो पृथ्वी को, न समुद्र को
और न ही किसी पेड़ को तब तक नाश करना, जब तक हम
हमारे परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें."

4 तब मैंने, जो चिह्नित किए गए थे, उनकी संख्या का योग सुना:
1,44,000. ये इस्राएल के हर एक गोत्र में से थे.

5 यहूदाह गोत्र से 12,000, रियूबेन के गोत्र से 12,000, गाद
के गोत्र से 12,000,

6 आशेर के गोत्र से 12,000, नफताली के गोत्र से 12,000,
मनश्शेह के गोत्र से 12,000,

7 शिमओन के गोत्र से 12,000, लेवी के गोत्र से 12,000,
इस्साखार के गोत्र से 12,000,

8 ज़ेबुलून के गोत्र से 12,000, योसेफ़ के गोत्र से 12,000 तथा
बिन्यामिन के गोत्र से 12,000 चिह्नित किए गए.

9 इसके बाद मुझे इतनी बड़ी भीड़ दिखाई दी, जिसकी गिनती
कोई नहीं कर सकता था. इस समूह में हर एक राष्ट्र, गोत्र,
प्रजाति और भाषा के लोग थे, जो सफ़ेद वस्त्र धारण किए तथा
हाथ में खजूर की शाखाएं लिए सिंहासन तथा मेमने के सामने
खड़े हुए थे.

10 वे ऊंचे शब्द में पुकार रहे थे: "उद्धार के स्रोत हैं, सिंहासन
पर बैठे, हमारे परमेश्वर और मेमना."

11 सिंहासन, पुरनियों तथा चारों प्राणियों के चारों ओर सभी
स्वर्गदूत खड़े हुए थे. उन्होंने सिंहासन की ओर मुख करके
दंडवत होकर परमेश्वर की वंदना की.

12 वे कह रहे थे: "आमेन! स्तुति, महिमा, ज्ञान, आभार व्यक्ति,
आदर, अधिकार तथा शक्ति सदा-सर्वदा हमारे परमेश्वर की
है. आमेन!"

13 तब पुरनियों में से एक ने मुझसे प्रश्न किया, "ये, जो सफ़ेद
वस्त्र धारण किए हुए हैं, कौन हैं और कहां से आए हैं?"

14 मैंने उत्तर दिया, "श्रीमान, यह तो आपको ही मालूम है." इस
पर उन्होंने कहा, "ये ही हैं वे, जो उस महाक्लेश में से सुरक्षित
निकलकर आए हैं. इन्होंने अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर
सफ़ेद किए हैं.

15 इसलिये, "वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने उपस्थित हैं
और उनके मंदिर में दिन-रात उनकी आराधना करते रहते हैं;
और वह, जो सिंहासन पर बैठे हैं, उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे.

16 'वे अब न तो कभी भूखे होंगे, न प्यासे. न तो सूर्य की गर्मी
उन्हें झुलसाएगी,' और न कोई अन्य गर्मी.

17 क्योंकि बीच के सिंहासन पर बैठा मेमना उनका चरवाहा
होगा; 'वह उन्हें जीवन के जल के सोतों तक ले जाएगा.'
'परमेश्वर उनकी आंखों से हर एक आंसू पोंछ डालेंगे.' "

Revelation 8:1

1 जब मेमने ने सातवीं मोहर तोड़ी, स्वर्ग में एक समय के लिए
सन्नाटा छा गया.

2 तब मैंने उन सात स्वर्गदूतों को देखा, जो परमेश्वर की
उपस्थिति में खड़े रहते हैं. उन्हें सात तुरहियां दी गईं.

3 सोने के धूपदान लिए हुए एक अन्य स्वर्गदूत आकर वेदी के
पास खड़ा हो गया. उसे बड़ी मात्रा में धूप दी गई कि वह उसे
सभी पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोने की वेदी पर
भेंट करे, जो सिंहासन के सामने है.

4 स्वर्गदूत के हाथ के धूपदान में से धुआं उठता हुआ पवित्र
लोगों की प्रार्थनाओं के साथ परमेश्वर के पास ऊपर पहुंच रहा
था.

5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान लिया, उसे वेदी की आग से भरकर
पृथ्वी पर फेंक दिया, जिससे बादलों की गर्जन, गड़गड़ाहट
तथा बिजलियां कौंध उठीं और भूकंप आ गया.

6 तब वे सातों स्वर्गदूत, जिनके पास तुरहियां थी, उन्हें फूंकने
के लिए तैयार हुए.

7 जब पहले स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो आग और ओले उत्पन्न
हुए, जिनमें लहू मिला हुआ था. उन्हें पृथ्वी पर फेंक दिया गया.
परिणामस्वरूप एक तिहाई पृथ्वी जल उठी, एक तिहाई पेड़
भस्म हो गए तथा सारी हरी घास भी.

8 जब दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो विशाल पर्वत जैसी कोई
जलती हुई वस्तु समुद्र में फेंक दी गई जिससे एक तिहाई
समुद्र लहू में बदल गया.

9 इससे एक तिहाई जल जंतु नाश हो गए तथा जलयानों में से
एक तिहाई जलयान भी.

10 जब तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो आकाश से एक
विशालकाय तारा मशाल के समान जलता हुआ एक तिहाई
नदियों तथा जल-स्रोतों पर जा गिरा.

11 यह तारा अपसन्तिनॉस कहलाता है—इससे एक तिहाई
जल कड़वा हो गया. जल के कड़वे हो जाने के कारण अनेक
मनुष्यों की मृत्यु हो गई.

12 जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो एक तिहाई सूर्य, एक
तिहाई चंद्रमा तथा एक तिहाई तारों पर ऐसा प्रहार हुआ कि
उनका एक तिहाई भाग अंधकारमय हो गया. इनमें से एक
तिहाई दिन अंधकारमय हो गया, वैसे ही एक तिहाई रात भी.

13 जब मैं यह सब देख ही रहा था, मैंने ठीक अपने ऊपर मध्य
हवा में उड़ते हुए एक गरुड़ को ऊंचे शब्द में यह कहते हुए
सुना, "उस तुरही नाद के कारण, जो शेष तीन स्वर्गदूतों द्वारा
किया जाएगा, पृथ्वी पर रहनेवालों पर धिक्कार, धिक्कार,
धिक्कार!"

Revelation 9:1

1 जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो मैंने आकाश से पृथ्वी
पर गिरा हुआ एक तारा देखा. उस तारे को अथाह गड्ढे की
कुंजी दी गई.

2 उसने अथाह गड्ढे का द्वार खोला तो उसमें से धुआं निकला,
जो विशाल भट्टी के धुएं के समान था. अथाह गड्ढे के इस धुएं
से सूर्य और आकाश निस्तेज और वायुमंडल काला हो गया.

3 इस धुएं में से टिड्डियां निकलकर पृथ्वी पर फैल गईं. उन्हें
वही शक्ति दी गई, जो पृथ्वी पर बिच्छुओं की होती है.

4 उनसे कहा गया कि वे पृथ्वी पर न तो घास को हानि पहुंचाएं,
न हरी वनस्पति को और न ही किसी पेड़ को परंतु सिर्फ़ उन्हीं
को, जिनके माथे पर परमेश्वर की मोहर नहीं है.

5 उन्हें किसी के प्राण लेने की नहीं परंतु सिर्फ़ पांच माह तक
घोर पीड़ा देने की ही आज्ञा दी गई थी. यह पीड़ा वैसी ही थी,
जैसी बिच्छू के डंक से होती है.

6 उन दिनों में मनुष्य अपनी मृत्यु को खोजेंगे किंतु उसे पाएंगे
नहीं, वे मृत्यु की कामना तो करेंगे किंतु मृत्यु उनसे दूर भागेगी.

7 ये टिड्डियां देखने में युद्ध के लिए सुसज्जित घोड़ों जैसी थी.
उनके सिर पर सोने के मुकुट के समान कुछ था. उनका
मुखमंडल मनुष्य के मुखमंडल जैसा था.

8 उनके बाल स्त्री बाल जैसे तथा उनके दांत सिंह के दांत जैसे
थे.

9 उनका शरीर मानो लोहे के कवच से ढका हुआ था. उनके
पंखों की आवाज ऐसी थी, जैसी युद्ध में अनेक घोड़े जुते हुए
दौड़ते रथों की होती है.

10 उनकी पूंछ बिच्छू के डंक के समान थी और उनकी पूंछ में
ही मनुष्यों को पांच माह तक पीड़ा देने की क्षमता थी.

11 अथाह गड्ढे का अपदूत उनके लिए राजा के रूप में था. इब्री
भाषा में उसे अबादोन तथा यूनानी में अपोलियॉन कहा जाता
है.

12 पहिली विपत्ति समाप्त हुई किंतु इसके बाद दो अन्य
विपत्तियां अभी बाकी हैं.

13 जब छठे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो मैंने परमेश्वर के सामने
स्थापित सोने की वेदी के चारों सींगों से आता हुआ एक शब्द
सुना,

14 जो छठे स्वर्गदूत के लिए, जिसने तुरही फूंकी थी, यह आज्ञा
थी, "महानद यूफ़्रातेस में जो चार स्वर्गदूत बंदी हैं, उन्हें आज़ाद
कर दो,"

15 इसलिये वे चारों स्वर्गदूत, जो इसी क्षण, दिन, माह और वर्ष
के लिए तैयार रखे गए थे, एक तिहाई मनुष्यों का संहार करने
के लिए आज़ाद कर दिए गए.

16 मुझे बताया गया कि घुड़सवारों की सेना की संख्या बीस
करोड़ है.

17 मैंने दर्शन में घोड़े और उन्हें देखा, जो उन पर बैठे थे. उनके
कवच आग के समान लाल, धूम्रकांत तथा गंधक जैसे पीले रंग
के थे. घोड़ों के सिर सिंहों के सिर जैसे थे तथा उनके मुंह से
आग, गंधक तथा धुआं निकल रहा था.

18 उनके मुंह से निकल रही तीन महामारियों—आग, गंधक
तथा धुएं से एक तिहाई मनुष्य नाश हो गए,

19 उन घोड़ों की क्षमता उनके मुंह तथा पूंछ में मौजूद थी
क्योंकि उनकी पूंछें सिर वाले सांपों के समान थी, जिनके द्वारा
वे पीड़ा देते थे.

20 शेष मनुष्यों ने, जो इन महामारियों से नाश नहीं हुए थे, अपने
हाथों के कामों से मन न फिराया—उन्होंने दुष्टात्माओं तथा
सोने, चांदी, कांसे, पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों की, जो न तो
देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती हैं,
उपासना करना न छोड़ा

21 और न ही उन्होंने हत्या, जादू-टोना, लैंगिक व्यभिचार तथा
चोरी करना छोड़ा.

Revelation 10:1

1 तब मुझे स्वर्ग से उतरता हुआ एक दूसरा शक्तिशाली
स्वर्गदूत दिखाई दिया, जिसने बादल को कपड़ों के समान
धारण किया हुआ था, उसके सिर के ऊपर सात रंगों का
मेघधनुष था, उसका चेहरा सूर्य सा तथा पैर आग के खंभे के
समान थे.

2 उसके हाथ में एक छोटी पुस्तिका खुली हुई थी. उसने अपना
दायां पांव समुद्र पर तथा बायां भूमि पर रखा.

3 वह ऊंचे शब्द में सिंह गर्जन जैसे पुकार उठा. उसके
पुकारने पर सात बादलों के गर्जन भी पुकार उठे.

4 जब सात बादलों के गर्जन बोल चुके, मैं लिखने के लिए तैयार
हुआ ही था; पर मैंने स्वर्ग से यह आवाज सुनी, "जो कुछ सात
बादलों के गर्जन ने कहा है, उसे लिखो मत परंतु मुहरबंद कर
दो."

5 तब उस स्वर्गदूत ने, जिसे मैंने समुद्र तथा भूमि पर खड़े हुए
देखा था, अपना दायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाया

6 और उसने उनकी, जो हमेशा के लिए जीवित हैं, जिन्होंने
स्वर्ग और उसमें बसी सब वस्तुओं को, पृथ्वी तथा उसमें बसी
सब वस्तुओं को तथा समुद्र तथा उसमें बसी सब वस्तुओं को
बनाया है, शपथ खाते हुए यह कहा: "अब और देर न होगी.

7 उस समय, जब सातवां स्वर्गदूत तुरही फूंकेगा, परमेश्वर
अपनी गुप्त योजनाएं पूरी करेंगे, जिनकी घोषणा उन्होंने अपने
दासों—अपने भविष्यद्वक्ताओं से की थी."

8 जो शब्द मैंने स्वर्ग से सुना था, उसने दोबारा मुझे संबोधित
करते हुए कहा, "जाओ! उस स्वर्गदूत के हाथ से, जो समुद्र
तथा भूमि पर खड़ा है, वह खुली हुई पुस्तिका ले लो."

9 मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर उससे वह पुस्तिका मांगी. उसने
मुझे वह पुस्तिका देते हुए कहा, "लो, इसे खा लो. यह तुम्हारे
उदर को तो खट्टा कर देगी किंतु तुम्हारे मुंह में यह शहद के
समान मीठी लगेगी."

10 मैंने स्वर्गदूत से वह पुस्तिका लेकर खा ली. मुझे वह मुंह में
तो शहद के समान मीठी लगी किंतु खा लेने पर मेरा उदर
खट्टा हो गया.

11 तब मुझसे कहा गया, "यह ज़रूरी है कि तुम दोबारा अनेक
प्रजातियों, राष्ट्रों, भाषाओं तथा राजाओं के संबंध में
भविष्यवाणी करो."

Revelation 11:1

1 तब मुझे एक सरकंडा दिया गया, जो मापने के यंत्र जैसा था
तथा मुझसे कहा गया, "जाओ, परमेश्वर के मंदिर तथा वेदी का
माप लो तथा वहां उपस्थित उपासकों की गिनती करो,

2 किंतु मंदिर के बाहरी आंगन को छोड़ देना, उसे न मापना
क्योंकि वह अन्य राष्ट्रों को सौंप दिया गया है. वे पवित्र नगर को
बयालीस माह तक रौंदेंगे.

3 मैं अपने दो गवाहों को, जिनका वस्त्र टाट का है, 1,260 दिन
तक भविष्यवाणी करने की प्रदान करूंगा."

4 ये दोनों गवाह ज़ैतून के दो पेड़ तथा दो दीवट हैं, जो पृथ्वी के
प्रभु के सामने खड़े हैं.

5 यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहे तो उनके मुंह से आग
निकलकर उनके शत्रुओं को चट कर जाती है. यदि कोई उन्हें
हानि पहुंचाना चाहे तो उसका इसी रीति से विनाश होना तय
है.

6 इनमें आकाश को बंद कर देने का सामर्थ्य है कि उनके
भविष्यवाणी के दिनों में वर्षा न हो. उनमें जल को लहू में बदल
देने की तथा जब-जब वे चाहें, पृथ्वी पर महामारी का प्रहार
करने की क्षमता है.

7 जब वे अपनी गवाही दे चुकें होंगे तो वह हिंसक पशु, जो उस
अथाह गड्ढे में से निकलेगा, उनसे युद्ध करेगा और उन्हें हरा
कर उनका विनाश कर डालेगा.

8 उनके शव उस महानगर के चौक में पड़े रहेंगे, जिसका
सांकेतिक नाम है सोदोम तथा मिस्र, जहां उनके प्रभु को क्रूस
पर भी चढ़ाया गया था.

9 हर एक समुदाय, गोत्र, भाषा तथा राष्ट्र के लोग साढ़े तीन दिन
तक उनके शवों को देखने के लिए आते रहेंगे और वे उन शवों
को दफ़नाने की अनुमति न देंगे.

10 पृथ्वी के निवासी उनकी मृत्यु पर आनंदित हो खुशी का
उत्सव मनाएंगे—यहां तक कि वे एक दूसरे को उपहार भी
देंगे क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी के निवासियों
को अत्यधिक ताड़नाएं दी थी.

11 साढ़े तीन दिन पूरे होने पर परमेश्वर की ओर से उनमें जीवन
की सांस का प्रवेश हुआ और वे खड़े हो गए. यह देख उनके
दर्शकों में भय समा गया.

12 तब स्वर्ग से उन्हें संबोधित करता हुआ एक ऊंचा शब्द
सुनाई दिया, "यहां ऊपर आओ!" और वे शत्रुओं के देखते-
देखते बादलों में से स्वर्ग में उठा लिए गए.

13 उसी समय एक भीषण भूकंप आया, जिससे नगर का एक
दसवां भाग नाश हो गया. इस भूकंप में सात हज़ार व्यक्ति मर

गए. शेष जीवित व्यक्तियों में भय समा गया और वे स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद-महिमा करने लगे.

14 दूसरी विपदा समाप्त हुई, तीसरी विपदा शीघ्र आ रही है.

15 जब सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो स्वर्ग से ये तरह-तरह की आवाजें सुनाई देने लगीं: "संसार का राज्य अब हमारे प्रभु तथा उनके मसीह का राज्य हो गया है, वही युगानुयुग राज्य करेंगे."

16 तब उन चौबीसों पुरनियों ने, जो अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, परमेश्वर के सामने दंडवत हो उनका धन्यवाद किया.

17 यह कहते हुए, "सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर! हम आपका, जो हैं और जो थे, आभार मानते हैं, कि आपने अपने अवर्णनीय अधिकारों को स्वीकार कर, अपने राज्य का आरंभ किया है.

18 राष्ट्र क्रोधित हुए, उन पर आपका क्रोध आ पड़ा. अब समय आ गया है कि मरे हुओं का न्याय किया जाए, आपके दासों—भविष्यद्वक्ताओं, पवित्र लोगों तथा सभी श्रद्धालुओं को, चाहे वे साधारण हों या विशेष, और उनका प्रतिफल दिया जाए, तथा उनका नाश किया जाए जिन्होंने पृथ्वी को गंदा कर रखा है."

19 तब परमेश्वर का मंदिर, जो स्वर्ग में है, खोल दिया गया और उस मंदिर में उनकी वाचा का संदूक दिखाई दिया. उसी समय बिजली कौंधी, गड़गड़ाहट तथा बादलों का गरजना हुआ, एक भीषण भूकंप आया और बड़े-बड़े ओले पड़े.

Revelation 12:1

1 तब स्वर्ग में एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया: एक स्त्री, सूर्य जिसका वस्त्र, चंद्रमा जिसके चरणों के नीचे तथा जिसके सिर पर बारह तारों का एक मुकुट था,

2 गर्भवती थी तथा पीड़ा में चिल्ला रही थी क्योंकि उसका प्रसव प्रारंभ हो गया था.

3 उसी समय स्वर्ग में एक और दृश्य दिखाई दिया: लाल रंग का एक विशालकाय परों वाला सांप, जिसके सात सिर तथा दस सींग थे. हर एक सिर पर एक-एक मुकुट था.

4 उसने आकाश के एक तिहाई तारों को अपनी पूंछ से समेटकर पृथ्वी पर फेंक दिया और तब वह परों वाला सांप उस स्त्री के सामने, जो शिशु को जन्म देने को थी, खड़ा हो गया कि शिशु के जन्म लेते ही वह उसे निगल जाए.

5 उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका सभी राष्ट्रों पर लोहे के राजदंड से राज्य करना तय था. इस शिशु को तुरंत ही परमेश्वर तथा उनके सिंहासन के पास पहुंचा दिया गया.

6 किंतु वह स्त्री बंजर भूमि की ओर भाग गई, जहां परमेश्वर द्वारा उसके लिए एक स्थान तैयार किया गया था कि वहां 1,260 दिन तक उसकी देखभाल और भरण-पोषण किया जा सके.

7 तब स्वर्ग में दोबारा युद्ध छिड़ गया: स्वर्गदूत मीख़ाएल और उसके अनुचरों ने परों वाले सांप पर आक्रमण किया. परों वाले सांप और उसके दूतों ने उनसे बदला लिया

8 किंतु वे टिक न सके इसलिये अब स्वर्ग में उनका कोई स्थान न रहा.

9 तब उस परों वाले सांप को—उस आदि सांप को, जो दियाबोलॉस तथा शैतान कहलाता है और जो पृथ्वी के सभी वासियों को भरमाया करता है, पृथ्वी पर फेंक दिया गया—उसे तथा उसके दूतों को भी.

10 तब मुझे स्वर्ग में एक ऊंचा शब्द यह घोषणा करता हुआ सुनाई दिया: "अब उद्धार, प्रताप, हमारे परमेश्वर का राज्य, तथा उनके मसीह का राज्य करने का अधिकार प्रकट हो गया है. हमारे भाई बहनों पर दोष लगानेवाले को, जो दिन-रात परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाता रहता है, निकाल दिया गया है.

11 उन्होंने मेमने के लहू तथा अपने गवाही के वचन के द्वारा, उसे हरा दिया है. अंतिम सांस तक उन्होंने अपने जीवन का मोह नहीं किया.

12 इसलिये सारे स्वर्ग तथा उसके वासियों, आनंदित हो! धिक्कार है तुम पर भूमि और समुद्र! क्योंकि शैतान तुम तक पहुंच चुका है. वह बड़े क्रोध में भर गया है, क्योंकि उसे मालूम हो चुका है कि उसका समय बहुत कम है."

13 जब परों वाले सांप को यह अहसास हुआ कि उसे पृथ्वी पर
फेंक दिया गया है, तो वह उस स्त्री को, जिसने उस पुत्र को
जन्म दिया था, ताड़ना देने लगा.

14 उस स्त्री को एक विशालकाय गरुड़ के दो पंख दिए गए कि
वह उड़कर उस सांप से दूर, बंजर भूमि में अपने निर्धारित
स्थान को चली जाए, जहां समय, समयों तथा आधे समय तक
उसकी देखभाल तथा भरण-पोषण किया जाना तय हुआ था.

15 इस पर उस सांप ने अपने मुंह से नदी के समान जल इस
रीति से बहाया कि वह स्त्री उस बहाव में बह जाए.

16 किंतु उस स्त्री की सहायता के लिए भूमि ने अपना मुंह
खोलकर परों वाले सांप द्वारा बहाए पानी के बहाव को अपने
में समा लिया.

17 इस पर परों वाला सांप उस स्त्री पर बहुत ही क्रोधित हो
गया. वह स्त्री की बाकी संतानों से, जो परमेश्वर के आदेशों का
पालन करती है तथा जो मसीह येशु के गवाह हैं, युद्ध करने
निकल पड़ा.

Revelation 13:1

1 परों वाला सांप समुद्रतट पर जा खड़ा हुआ, और मैंने समुद्र
में से एक हिंसक पशु को ऊपर आते देखा. उसके दस सींग
तथा सात सिर थे. दसों सींगों पर एक-एक मुकुट था तथा
उसके सिरों पर परमेश्वर की निंदा के शब्द लिखे थे.

2 इस पशु का शरीर चीते जैसा, पांव भालू जैसे और मुंह सिंह
जैसा था. उस परों वाले सांप ने अपनी शक्ति, अपना सिंहासन
तथा राज्य का सारा अधिकार उसे सौंप दिया.

3 उसके एक सिर को देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उस
पर जानलेवा हमला किया गया हो और वह घाव अब भर चुके
है. अचंभा करते हुए सारी पृथ्वी के लोग इस पशु के पीछे-पीछे
चलने लगे

4 और उन्होंने उस परों वाले सांप की पूजा-अर्चना की क्योंकि
उसने शासन का अधिकार उस पशु को सौंप दिया था. वे यह
कहते हुए उस पशु की भी पूजा-अर्चना करने लगे, “कौन है
इस पशु के समान? किसमें है इससे लड़ने की क्षमता?”

5 उसे डींग मारने तथा परमेश्वर की निंदा करने का अधिकार
तथा बयालीस माह तक शासन करने की अनुमति दी गई.

6 पशु ने परमेश्वर, उनके नाम तथा उनके निवास अर्थात् स्वर्ग
और उन सब की, जो स्वर्ग में रहते हैं, निंदा करना शुरू कर
दिया.

7 उसे पवित्र लोगों पर आक्रमण करने तथा उन्हें हराने और
सभी गोत्रों, प्रजातियों, भाषाओं तथा राष्ट्रों पर अधिकार दिया
गया.

8 पृथ्वी पर रहनेवाले उसकी पूजा-अर्चना करेंगे—वे सभी
जिनके नाम सृष्टि की शुरुआत ही से उस मेमने की जीवन-
पुस्तक में, जो बलि किया गया था, लिखे नहीं गए.

9 जिसके कान हों, वह सुन ले:

10 “जो कैद के लिए लिखा गया है, वह बंदीगृह में जाएगा. जो
तलवार से मारता है, उसे तलवार ही से मारा जाएगा.” इसके
लिए आवश्यक है पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास.

11 तब मैंने एक अन्य हिंसक पशु को पृथ्वी में से ऊपर आते
हुए देखा, जिसके मेंढ़े के समान दो सींग थे. वह परों वाले सांप
के शब्द में बोला करता था.

12 वह पहले से लिखे हिंसक पशु के प्रतिनिधि के रूप में
उसके राज्य के अधिकार का उपयोग कर रहा था. वह पृथ्वी
तथा पृथ्वी पर रहनेवालों को उस पहले से लिखे हिंसक पशु
की, जिसका घाव भर चुका था, पूजा-अर्चना करने के लिए
मजबूर कर रहा था.

13 वह चमत्कार भरे चिह्न दिखाता था. यहां तक कि वह लोगों
के देखते ही देखते आकाश से पृथ्वी पर आग बरसा देता था.

14 इन चमत्कार भरे चिह्नों द्वारा, जो वह उस पशु के प्रतिनिधि
के रूप में दिखा रहा था, वह पृथ्वी पर रहनेवालों को भरमाता
था. उसने पृथ्वी पर रहनेवालों से उस पशु की मूर्ति बनाने के
लिए कहा, जो तलवार के जानलेवा हमले के बाद भी जीवित
रहा.

15 उसे उस पशु की मूर्ति को ज़िंदा करने की क्षमता दी गई कि
वह मूर्ति बातचीत कर सके तथा उनका नाश करवा सके,
जिन्हें उस मूर्ति की पूजा-अर्चना करना स्वीकार न था.

16 उसने साधारण और विशेष, धनी-निर्धन; स्वतंत्र या दास,
सभी को दाएं हाथ या माथे पर एक चिह्न अंकित करवाने के
लिए मजबूर किया

17 कि उसके अलावा कोई भी, जिस पर उस पशु का नाम या
उसके नाम का अंक अंकित है, लेनदेन न कर सके.

18 इसके लिए आवश्यक है बुद्धिमानी. वह, जिसमें समझ है,
उस पशु के अंकों का जोड़कर ले. यह अंक मनुष्य के नाम का
है, जिसकी संख्या का जोड़ है 666.

Revelation 14:1

1 तब मैंने देखा कि वह मेमना ज़ियोन पर्वत पर खड़ा है और
उसके साथ 1,44,000 व्यक्ति भी हैं, जिनके मस्तक पर
उसका तथा उसके पिता का नाम लिखा हुआ है.

2 तब मुझे स्वर्ग से एक शब्द सुनाई दिया, जो प्रचंड लहरों की
आवाज के समान तथा जो बड़ी गर्जन-सी आवाज के समान
था. यह शब्द, जो मैंने सुना, ऐसा था मानो अनेक वीणा
बजानेवाले वीणा बजा रहे हों.

3 वे सिंहासन के सामने, चारों प्राणियों तथा पुरनियों के सामने
एक नया गीत गा रहे थे. उन 1,44,000 व्यक्तियों के अलावा,
जो सारी मानव जाति में से छुड़ाए गए थे, किसी भी अन्य में यह
गीत सीखने की योग्यता ही न थी.

4 ये वे हैं, जो स्त्री-संगति से अशुद्ध नहीं हुए हैं क्योंकि इन्होंने
स्वयं को स्त्री-संगति से अछूता रखा है. ये ही हैं वे, जो हमेशा
मेमने के पीछे चलते हैं—चाहे मेमना कहीं भी जाए. इन्हें
परमेश्वर तथा मेमने के लिए उपज के पहले फल के समान
मनुष्यों में से छुड़ाया गया है.

5 झूठ इनके मुख से कभी न निकला—ये निष्कलंक हैं.

6 तब मैंने बीच आकाश में एक स्वर्गदूत को उड़ते हुए देखा,
जिसके पास सभी पृथ्वी पर रहनेवालों—हर एक राष्ट्र, गोत्र,
भाषा तथा प्रजाति में प्रचार के लिए अनंत काल का ईश्वरीय
सुसमाचार था.

7 उसने ऊंचे शब्द में कहा, "परमेश्वर से डरो. उनकी महिमा
करो क्योंकि न्याय का समय आ पहुंचा है. आराधना उनकी
करो, जिन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र तथा जल के सोतों को बनाया
है."

8 पहले स्वर्गदूत के बाद दूसरा स्वर्गदूत यह कहते हुए आया,
"सर्वनाश हो गया! बड़े बाबेल का सर्वनाश हो गया! बाबेल,
जिसने सारे राष्ट्रों को अपने व्यभिचार की मदहोशी का
दाखरस पिलाया है."

9 इन दोनों के बाद एक तीसरा स्वर्गदूत ऊंचे शब्द में यह
कहता हुआ आया, "यदि कोई उस पशु तथा उसकी मूर्ति की
पूजा-अर्चना करेगा तथा अपने मस्तक या हाथ पर वह चिह्न
अंकित करवाएगा,

10 वह भी परमेश्वर के क्रोध का दाखरस पिएगा, जो परमेश्वर
के क्रोध के प्याले में ही उंडेली गई है. उसे पवित्र स्वर्गदूतों तथा
मेमने की उपस्थिति में आग व गंधक की घोर पीड़ा दी जाएगी.

11 वे, जो उस पशु तथा उसकी मूर्ति की पूजा-अर्चना करते हैं
तथा जिन पर उसके नाम का चिह्न अंकित है, उनकी पीड़ा का
धुआं निरंतर उठता रहेगा तथा उन्हें न तो दिन में चैन मिलेगा
और न रात में."

12 इसके लिए आवश्यक है पवित्र लोगों का धीरज, जो परमेश्वर
के आज्ञाकारी हैं तथा जिनका विश्वास मसीह येशु में है.

13 तब मुझे स्वर्ग से एक शब्द यह आज्ञा देता हुआ सुनाई दिया,
"लिखो: धन्य होंगे वे मृत, अब से जिनकी मृत्यु प्रभु में होगी."
"सच है!" आत्मा ने पुष्टि की. "वे अपने सारे परिश्रम से विश्राम
पाएंगे क्योंकि उनके भले काम उनके साथ हैं."

14 इसके बाद मैंने एक उज्जवल बादल देखा. उस पर मनुष्य
के पुत्र समान कोई बैठा था, जिसके सिर पर सोने का मुकुट
तथा हाथ में पैनी हसिया थी.

15 एक दूसरा स्वर्गदूत मंदिर से बाहर निकला और उससे, जो
बादल पर बैठा था, ऊंचे शब्द में कहने लगा. "अपना हसिया

चला कर फसल काटिए, कटनी का समय आ पहुंचा है क्योंकि
पृथ्वी की फसल पक चुकी है."

16 तब उसने, जो बादल पर बैठा था, अपना हसिया पृथ्वी के
ऊपर घुमाया तो पृथ्वी की फसल की कटनी पूरी हो गई.

17 तब एक और स्वर्गदूत उस मंदिर से, जो स्वर्ग में है, बाहर
निकला. उसके हाथ में भी पैना हंसिया था.

18 तब एक अन्य स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, वेदी से
बाहर निकला तथा उस स्वर्गदूत से, जिसके हाथ में पैना
हसिया था, ऊंचे शब्द में कहने लगा. "अपना हसिया चला कर
पृथ्वी की पूरी दाख की फसल के गुच्छे इकट्ठा करो क्योंकि
दाख पक चुकी है."

19 तब उस स्वर्गदूत ने अपना हसिया पृथ्वी की ओर घुमाया
और पृथ्वी की सारी दाख इकट्ठा कर परमेश्वर के क्रोध के
विशाल दाख के कुंड में फेंक दी.

20 तब नगर के बाहर दाखरस कुंड में दाख को रौंदा गया. उस
रसकुंड में से जो लहू बहा, उसकी लंबाई 300 किलोमीटर
तथा ऊंचाई घोड़े की लगाम जितनी थी.

Revelation 15:1

1 तब मैंने स्वर्ग में एक अद्‌भुत और आश्चर्यजनक दृश्य देखा:
सात स्वर्गदूत सात अंतिम विपत्तियां लिए हुए थे—अंतिम
इसलिये कि इनके साथ परमेश्वर के क्रोध का अंत हो जाता है.

2 तब मुझे ऐसा अहसास हुआ मानो मैं एक कांच की झील को
देख रहा हूं, जिसमें आग मिला दी गई हो. मैंने इस झील के तट
पर उन्हें खड़े हुए देखा, जिन्होंने उस हिंसक पशु, उसकी मूर्ति
तथा उसके नाम की संख्या पर विजय प्राप्त की थी. इनके
हाथों में परमेश्वर द्वारा दी हुई वीणा थी.

3 वे परमेश्वर के दास मोशेह तथा मेमने का गीत गा रहे थे:
"अद्‌भुत और असाधारण काम हैं आपके, प्रभु सर्वशक्तिमान
परमेश्वर. धर्मी और सच्चे हैं उद्देश्य आपके, राष्ट्रों के राजन.

4 कौन है, प्रभु, जिसमें आपके प्रति श्रद्धा न होगी, कौन है, जो
आपकी महिमा न करेगा? मात्र आप ही हैं पवित्र. सभी राष्ट्र

आकर आपका धन्यवाद करेंगे, क्योंकि आपके न्याय के कार्य
प्रकट हो चुके हैं."

5 इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में मंदिर, जो साक्ष्यों का तंबू
है, खोल दिया गया.

6 मंदिर में से वे सातों स्वर्गदूत, जो सात विपत्तियां लिए हुए थे,
बाहर निकले. वे मलमल के स्वच्छ उज्जवल वस्त्र धारण किए
हुए थे तथा उनकी छाती पर सोने की कमरबंध थी.

7 तब चार जीवित प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को
सनातन परमेश्वर के क्रोध से भरे सात सोने के कटोरे दे दिए.

8 मंदिर परमेश्वर की आभा तथा सामर्थ्य के धुएं से भर गया
और उस समय तक मंदिर में कोई भी प्रवेश न कर सका, जब
तक उन सातों स्वर्गदूतों द्वारा उंडेली गई सातों विपत्तियां
समाप्त न हो गईं.

Revelation 16:1

1 तब मुझे मंदिर में से एक ऊंचा शब्द उन सात स्वर्गदूतों को
संबोधित करते हुए सुनाई दिया: "जाओ! परमेश्वर के क्रोध के
सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो."

2 इसलिये पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर
उंडेल दिया. परिणामस्वरूप उन व्यक्तियों को, जिन पर उस
हिंसक पशु की मुहर थी तथा जो उसकी मूर्ति की पूजा करते
थे, कष्टदायी और घातक फोड़े निकल आए.

3 दूसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र पर उंडेला तो
समुद्र मरे हुए व्यक्ति के लहू जैसा हो गया और समुद्र के हर
एक प्राणी की मृत्यु हो गई.

4 तीसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा नदियों और पानी के
सोतों पर उंडेला तो वे लहू बन गए.

5 तब मैंने सारे जल के अधिकारी स्वर्गदूत को यह कहते हुए
सुना: "आप, जो हैं, जो थे, धर्मी हैं, परम पवित्र, उचित हैं आपके
निर्णय,

6 इसलिये कि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का
लहू बहाया, पीने के लिए उन्हें आपने लहू ही दे दिया, वे इसी
योग्य हैं."

7 तब मैंने समर्थन में वेदी को यह कहते हुए सुना: "सच है, प्रभु
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, उचित और धर्मी हैं आपके निर्णय."

8 चौथे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा सूर्य पर उंडेला तो सूर्य
को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह मनुष्यों को अपनी गर्मी
से झुलसा दे.

9 इसलिये मनुष्य उस बहुत गर्म ताप से झुलस गए और वे
परमेश्वर के नाम की, जिन्हें इन सब विपत्तियों पर अधिकार है,
शाप देने लगे. उन्होंने पश्चाताप कर परमेश्वर की महिमा करने
से इनकार किया.

10 पांचवें स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा उस हिंसक पशु के
सिंहासन पर उंडेला तो उसके साम्राज्य पर अंधकार छा गया.
पीड़ा के कारण मनुष्य अपनी जीभ चबाने लगे.

11 पीड़ा और फोड़ों के कारण वे स्वर्ग के परमेश्वर को शाप देने
लगे. उन्होंने अपने कुकर्मों से पश्चाताप करने से इनकार किया.

12 छठे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा महानद यूफ्रातेस पर
उंडेला तो उसका जल सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के
लिए मार्ग तैयार हो जाए.

13 तब मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं को जो मेंढक के समान थी;
उस परों वाले सांप के मुख से, उस हिंसक पशु के मुख से तथा
झूठे भविष्यवक्ता के मुख से निकलते हुए देखा.

14 ये वे दुष्टात्माएं है, जो चमत्कार चिह्न दिखाते हुए पृथ्वी के
सभी राजाओं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस न्याय-दिवस
पर युद्ध करने के लिए इकट्ठा करती हैं.

15 "याद रहे: मैं चोर के समान आऊंगा! धन्य वह है, जो जागता
है और अपने वस्त्रों की रक्षा करता है कि उसे लोगों के सामने
नग्न होकर लज्जित न होना पड़े."

16 उन आत्माओं ने राजाओं को उस स्थान पर इकट्ठा किया,
जो इब्री भाषा में हरमागेद्दौन कहलाता है.

17 सातवें स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा वायु पर उंडेला, और
मंदिर के सिंहासन से एक ऊंचा शब्द सुनाई दिया, "पूरा हो
गया!"

18 तुरंत ही बिजली की कौंध, गड़गड़ाहट तथा बादलों की
गर्जन होने लगी और एक भयंकर भूकंप आया. यह भूकंप
इतना शक्तिशाली था कि पृथ्वी पर ऐसा भयंकर भूकंप मनुष्य
की उत्पत्ति से लेकर अब तक नहीं आया था—इतना
शक्तिशाली था यह भूकंप

19 कि महानगर फटकर तीन भागों में बंट गया. सभी राष्ट्रों के
नगर धराशायी हो गए. परमेश्वर ने बड़े नगर बाबेल को याद
किया कि उसे अपने क्रोध की जलजलाहट का दाखरस का
प्याला पिलाएं.

20 हर एक द्वीप विलीन हो गया और सभी पर्वत लुप्त हो गए.

21 आकाश से मनुष्यों पर विशालकाय ओले बरसने लगे और
एक-एक ओला लगभग पैंतालीस किलो का था. ओलों की इस
विपत्ति के कारण लोग परमेश्वर को शाप देने लगे क्योंकि यह
विपत्ति बहुत असहनीय थी.

Revelation 17:1

1 तब कटोरे लिए हुए सात स्वर्गदूतों में से एक ने आकर मुझसे
कहा, "यहां आओ, मैं तुम्हें उस कुख्यात व्यभिचारिणी के लिए
तय किए गए दंड दिखाऊं. यह व्यभिचारिणी बहुत से पानी पर
बैठी हुई है.

2 इसके साथ पृथ्वी के राजा वेश्यागामी में लीन थे तथा जिसके
वेश्यागामी का दाखरस से पृथ्वी पर रहनेवाले मतवाले थे."

3 वह स्वर्गदूत मुझे मेरी आत्मा में ध्यानमग्न कर एक बंजर भूमि
में ले गया. वहां मैंने एक स्त्री को लाल रंग के एक हिंसक
जानवर पर बैठे देखा, जो परमेश्वर की निंदा के शब्द से ढका
सा था और इसके सात सिर तथा दस सींग थे.

4 वह स्त्री बैंगनी और लाल रंग के वस्त्र तथा सोने, रत्नों तथा
मोतियों के आभूषण धारण की हुई थी. उसके हाथ में सोने का
प्याला था, जो अश्लीलता तथा स्वयं उसकी वेश्यागामी की
गंदगी से भरा हुआ था.

5 उसके माथे पर एक नाम, एक रहस्य लिखा था: भव्य
महानगरी बाबेल पृथ्वी पर व्यभिचारणियों की माता और सारी
अश्लीलताओं की जननी.

6 मैंने देखा कि वह स्त्री पवित्र लोगों तथा मसीह येशु के साक्ष्यों
का लहू पीकर मतवाली थी. उसे देख मैं बहुत ही हैरान रह
गया.

7 किंतु स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: "क्यों हो रहे हो हैरान? मैं तुम्हें
इस स्त्री तथा इस हिंसक जानवर का रहस्य बताऊंगा, जिसके
सात सिर और दस सींग हैं, जिस पर यह स्त्री बैठी हुई है.

8 वह हिंसक जानवर, जिसे तुमने देखा था, पहले जीवित था
किंतु अब नहीं. अब वह अथाह गड्ढे से निकलकर आने पर
है—किंतु स्वयं अपने विनाश के लिए. पृथ्वी के वे सभी वासी,
जिनके नाम सृष्टि के प्रारंभ से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं
हैं, जब यह देखेंगे कि यह हिंसक पशु पहले था, अब नहीं है
किंतु दोबारा आएगा, आश्चर्यचकित हो जाएंगे.

9 "इसे समझने के लिए आवश्यक है सूक्ष्म ज्ञान: वे सात सिर
सात पर्वत हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है. वे सात राजा भी हैं.

10 इनमें से पांच का पतन हो चुका है, एक जीवित है और एक
अब तक नहीं आया. जब वह आएगा, वह थोड़े समय के लिए
ही आएगा.

11 वह हिंसक पशु, जो था और जो नहीं है स्वयं आठवां राजा
है किंतु वह है इन सातों में से ही एक, जिसका विनाश तय है.

12 "वे दस सींग, जो तुमने देखे हैं, दस राजा हैं, जिन्हें अब तक
राज्य प्राप्त नहीं हुआ किंतु उन्हें एक घंटे के लिए उस हिंसक
पशु के साथ राजसत्ता दी जाएगी.

13 ये राजा अपना अधिकार व सत्ता उस पशु को सौंपने के लिए
एक मत हैं;

14 ये मेमने के विरुद्ध युद्ध छेड़ेंगे किंतु मेमना उन्हें हराएगा
क्योंकि सर्वप्रधान प्रभु और सर्वप्रधान राजा वही है. मेमने के
साथ उसके बुलाए हुए, चुने हुए तथा विश्वासपात्र होंगे."

15 तब स्वर्गदूत ने आगे कहा, "वह जल राशि, जो तुमने देखी,
जिस पर वह व्यभिचारिणी बैठी है, प्रजातियां, लोग, राष्ट्र तथा
भाषाएं हैं.

16 और जो पशु तथा दस सींग तुमने देखे हैं, वे उस
व्यभिचारिणी से घृणा करेंगे, उसे निर्वस्त्र कर अकेला छोड़
देंगे, उसका मांस खाएंगे और उसका बचा हुआ भाग जला
देंगे.

17 परमेश्वर ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन राजाओं के
मनों को एक कर दिया है कि वे उस पशु को अपना राज्य तब
तक के लिए सौंप दें, जब तक परमेश्वर के वचन की पूर्ति न हो
जाए.

18 जिस स्त्री को तुमने देखा, वह महानगरी है, जिसकी प्रभुता
पृथ्वी के राजाओं पर है."

Revelation 18:1

1 इसके बाद मैंने एक दूसरे स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए
देखा. वह बहुत ही सामर्थ्यी था. उसके तेज से पृथ्वी चमक
उठी.

2 उसने ऊंचे शब्द में घोषणा की: " 'गिर गया! गिर गया! भव्य
महानगर बाबेल गिर गया!' अब यह दुष्टात्माओं का घर,
अशुद्ध आत्माओं का आश्रय और, हर एक अशुद्ध पक्षी का
बसेरा तथा अशुद्ध और घृणित जानवरों का बसेरा बन गई है.

3 सब राष्ट्रों ने उसके वेश्यागामी के लगन का दाखरस का पान
किया है. पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ वेश्यागामी की है,
तथा पृथ्वी के व्यापारी उसके भोग विलास के धन से धनी हो
गए हैं."

4 तब मुझे एक अन्य शब्द स्वर्ग से सुनाई दिया: " 'मेरी प्रजा
उस नगरी से बाहर निकल आओ कि तुम,' उसके पापों में
उसके सहभागी न बनो कि, उसकी विपत्तियां तुम पर न आ
पड़ें.

5 उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक आ पहुंचा है. परमेश्वर ने उसके
अधर्मों को याद किया है.

6 उसने जैसा किया है तुम भी उसके साथ वैसा ही करो. उसके
अधर्मों के अनुसार उससे दो गुणा बदला लो. उसने जिस प्याले
में मिश्रण तैयार किया है, तुम उसी में उसके लिए दो गुणा
मिश्रण तैयार करो.

7 उसने जितनी अपनी प्रशंसा की और उसने जितना भोग
विलास किया है, तुम भी उसे उतनी ही यातना और पीड़ा दो.
क्योंकि वह मन ही मन कहती है, 'मैं तो रानी समान
विराजमान हूं, मैं विधवा नहीं हूं; मैं कभी विलाप न करूंगी.'

8 यही कारण है कि एक ही दिन में उस पर विपत्ति आ पड़ेगी:
महामारी, विलाप और अकाल. उसे आग में जला दिया
जाएगा, क्योंकि सामर्थ्यी हैं प्रभु परमेश्वर, जो उसका न्याय
करेंगे.

9 "तब पृथ्वी के राजा, जो उसके साथ वेश्यागामी में लीन रहे,
जिन्होंने उसके साथ भोग विलास किया, उस ज्वाला का धुआं
देखेंगे, जिसमें वह भस्म की गई और वे उसके लिए रोएंगे तथा
विलाप करेंगे.

10 उसकी यातना की याद कर डर के मारे दूर खड़े हुए वे
कहेंगे: " 'भयानक! कितना भयानक! हे महानगरी, सामर्थ्यी
महानगरी बाबेल! घंटे भर में ही तेरे दंड का समय आ पहुंचा
है!'

11 "पृथ्वी के व्यापारी उस पर रोते हुए विलाप करेंगे क्योंकि
उनकी वस्तुएं अब कोई नहीं खरीदता:

12 सोने, चांदी, कीमती रत्न, मोती, उत्तम मलमल, बैंगनी तथा
लाल रेशम, सब प्रकार की सुगंधित लकड़ी तथा हाथी-दांत
की वस्तुएं, कीमती लकड़ी की वस्तुएं, कांसे, लोहे तथा
संगमरमर से बनी हुई वस्तुएं,

13 दालचीनी, मसाले, धूप, मुर्र, लोबान, दाखरस, ज़ैतून का
तेल, मैदा, गेहूं, पशु धन, भेड़ें, घोड़े तथा चौपहिया वाहन; दासों
तथा मनुष्यों का कोई खरीददार नहीं रहा.

14 "जिस फल से संतुष्ट होने की तुमने इच्छा की थी, वह अब
रही ही नहीं. विलासिता और ऐश्वर्य की सभी वस्तुएं तुम्हें
छोड़कर चली गईं. वे अब तुम्हें कभी न मिल सकेंगी.

15 इन वस्तुओं के व्यापारी, जो उस नगरी के कारण धनवान
हो गए, अब उसकी यातना के कारण भयभीत हो दूर खड़े हो
रोएंगे और विलाप करते हुए कहेंगे:

16 " 'धिक्कार है! धिक्कार है! हे, महानगरी, जो उत्तम मलमल
के बैंगनी तथा लाल वस्त्र धारण करती थी और स्वर्ण, कीमती
रत्नों तथा मोतियों से दमकती थी!

17 क्षण मात्र में ही उजड़ गया तेरा वैभव!' "हर एक जलयान
स्वामी, हर एक नाविक, हर एक यात्री तथा हर एक, जो अपनी
जीविका समुद्र से कमाता है, दूर ही खड़ा रहा.

18 उसे भस्म करती हुई ज्वाला का धुआं देख वे पुकार उठे, 'है
कहीं इस भव्य महानगरी जैसा कोई अन्य नगर?'

19 अपने सिर पर धूल डाल, रोते-चिल्लाते, विलाप करते हुए वे
कहने लगे: " 'धिक्कार है! धिक्कार है, तुझ पर भव्य महानगरी,
जिसकी संपत्ति के कारण सभी जलयान स्वामी धनी हो गए!
अब तू घंटे भर में उजाड़ हो गई है!'

20 "आनंदित हो हे स्वर्ग! आनंदित, हो पवित्र लोग! प्रेरित तथा
भविष्यद्वक्ता! क्योंकि परमेश्वर ने उसे तुम्हारे साथ किए
दुर्व्यवहार के लिए दंडित किया है."

21 इसके बाद एक बलवान स्वर्गदूत ने विशाल चक्की के पाट
के समान पत्थर उठाकर समुद्र में प्रचंड वेग से फेंकते हुए
कहा: "इसी प्रकार फेंक दिया जाएगा भव्य महानगर बाबेल
भी, जिसका कभी कोई अवशेष तक न मिलेगा.

22 अब से तुझमें गायकों, वीणा, बांसुरी तथा तुरही, का शब्द
कभी सुनाई न पड़ेगा. अब से किसी भी कारीगर का, कोई
कार्य तुझमें न पाया जाएगा. अब से तुझमें चक्की की आवाज,
सुनाई न देगी.

23 अब से तुझमें एक भी दीप न जगमगाएगा, अब से तुझमें वर
और वधू का, उल्लसित शब्द भी न सुना जाएगा, तेरे व्यापारी

पृथ्वी के सफल व्यापारी थे. तेरे जादू ने सभी राष्ट्रों को भरमा दिया था.

24 तुझमें ही भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों, तथा पृथ्वी पर घात किए गए सभी व्यक्तियों का लहू पाया गया."

Revelation 19:1

1 इसके बाद मुझे स्वर्ग से एक ऐसी आवाज सुनाई दी मानो एक बड़ी भीड़ ऊंचे शब्द में कह रही हो: "हाल्लेलूयाह! उद्धार, महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर की हैं,

2 क्योंकि सही और धर्मी हैं उनके निर्णय. क्योंकि दंड दिया है उन्होंने उस कुख्यात व्यभिचारिणी को, जो अपने वेश्यागामी से पृथ्वी को भ्रष्ट करती रही है. उन्होंने उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया."

3 उनका शब्द दोबारा सुनाई दिया: "हाल्लेलूयाह! उसे भस्म करती ज्वाला का धुआं हमेशा उठता रहेगा."

4 वे चौबीसों प्राचीन तथा चारों जीवित प्राणी परमेश्वर के सामने, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, दंडवत ओर वंदना करते हुए कहने लगे: "आमेन, हाल्लेलूयाह!"

5 तब सिंहासन से एक शब्द सुनाई दिया: "तुम सब, जो परमेश्वर के दास हो, तुम सब, जो उनके श्रद्धालु हो, साधारण या विशेष, परमेश्वर की स्तुति करो."

6 तब मुझे बड़ी भीड़ का शब्द तेज लहरों तथा बादलों की गर्जन की आवाज के समान यह कहता सुनाई दिया: "हाल्लेलूयाह! प्रभु हमारे परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान हैं, राज्य-कर रहे हैं.

7 आओ, हम आनंद मनाएं, मगन हों और उनकी महिमा करें! क्योंकि मेमने के विवाहोत्सव का समय आ गया है, और उसकी वधू ने स्वयं को सजा लिया है.

8 उसे उत्तम मलमल के उज्जवल तथा स्वच्छ वस्त्र, धारण करने की आज्ञा दी गई." (यह उत्तम मलमल है पवित्र लोगों के धर्मी काम.)

9 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "लिखो: 'धन्य हैं वे, जो मेमने के विवाह-भोज में आमंत्रित हैं!' " तब उसने यह भी कहा, "परमेश्वर के द्वारा भेजा गया-यह संदेश सच है."

10 इसलिये मैं उस स्वर्गदूत को दंडवत करने उसके चरणों में गिर पड़ा किंतु उसने मुझसे कहा, "मेरी वंदना न करो! मैं तो तुम्हारे और तुम्हारे भाई बहनों के समान ही, जो मसीह येशु के गवाह हैं, दास हूं. दंडवत परमेश्वर को करो! क्योंकि मसीह येशु के विषय का प्रचार ही भविष्यवाणी का आधार है."

11 तब मैंने स्वर्ग खुला हुआ देखा. वहां मेरे सामने एक घोड़ा था. उसका रंग सफ़ेद था तथा जो उस पर सवार है, वह विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है. वह धार्मिकता में न्याय और युद्ध करता है.

12 उसकी आंखें अग्नि की ज्वाला हैं, उसके सिर पर अनेक मुकुट हैं तथा उसके शरीर पर एक नाम लिखा है, जो उसके अलावा दूसरे किसी को मालूम नहीं.

13 वह लहू में डुबाया हुआ वस्त्र धारण किए हुए है और उसका नाम है परमेश्वर का शब्द.

14 स्वर्ग की सेनाएं उत्तम मलमल के सफ़ेद तथा स्वच्छ वस्त्रों में सफ़ेद घोड़े पर उसके पीछे-पीछे चल रही थी.

15 उसके मुंह से एक तेज तलवार निकली कि वह उससे राष्ट्रों का विनाश करे. वह लोहे के राजदंड से उन पर राज्य करेगा. वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के दाखरस का रसकुंड रौंदेगा.

16 उसके वस्त्र और उसकी जांघ पर जो नाम लिखा है, वह यह है: राजाओं का राजा, प्रभुओं का प्रभु.

17 तब मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा हुआ देखा, जिसने ऊंचे आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा, "आओ, प्रभु के आलीशान भोज के लिए इकट्ठा हो जाओ

18 कि तुम राजाओं, सेनापतियों, शक्तिशाली मनुष्यों, घोड़ों, घुड़सवारों तथा सब मनुष्यों का—स्वतंत्र या दास, साधारण या विशेष, सबका मांस खाओ."

19 तब मैंने देखा कि हिंसक पशु तथा पृथ्वी के राजा और उनकी सेनाएं उससे, जो घोड़े पर बैठा है तथा उसकी सेना से युद्ध करने के लिए इकट्ठा हो रही हैं.

20 तब उस हिंसक पशु को पकड़ लिया गया. उसके साथ ही उस झूठे भविष्यवक्ता को भी, जो उस पशु के नाम में चमत्कार चिह्न दिखाकर उन्हें छल रहा था, जिन पर उस हिंसक पशु की मुहर छपी थी तथा जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे. इन दोनों को जीवित ही गंधक से धधकती झील में फेंक दिया गया.

21 शेष का संहार उस घुड़सवार के मुंह से निकली हुई तलवार से कर दिया गया तथा सभी पक्षियों ने ठूंस-ठूंस कर उनका मांस खाया.

Revelation 20:1

1 इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा. उसके हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी तथा एक भारी सांकल थी.

2 उसने उस परों वाले सांप को—उस पुराने सांप को, जो वस्तुतः दियाबोलॉस या शैतान है, एक हज़ार वर्ष के लिए बांध दिया.

3 तब स्वर्गदूत ने उसे अथाह गड्ढे में फेंक दिया, उसे बंद कर उस पर मुहर लगा दी कि वह हज़ार वर्ष पूरा होने तक अब किसी भी राष्ट्र से छल न करे. यह सब होने के बाद यह ज़रूरी था कि उसे थोड़े समय के लिए मुक्त किया जाए.

4 तब मैंने सिंहासन देखे. उन पर वे व्यक्ति बैठे थे, जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था. तब मैंने उनकी आत्माओं को देखा, जिनके सिर मसीह येशु से संबंधित उनकी गवाही तथा परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण उड़ा दिए गए थे. उन्होंने उस हिंसक पशु या उसकी मूर्ति की पूजा नहीं की थी. जिनके मस्तक तथा हाथ पर उसकी मुहर नहीं लगी थी, वे जीवित हो उठे और उन्होंने हज़ार वर्ष तक मसीह के साथ राज्य किया.

5 यही है वह पहला पुनरुत्थान—बाकी मरे हुए तब तक जीवित न हुए, जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो गए.

6 धन्य और पवित्र हैं वे, जिन्हें इस पहले पुनरुत्थान में शामिल किया गया है. दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार न होगा परंतु वे परमेश्वर और मसीह के पुरोहित होंगे तथा हज़ार वर्ष तक उनके साथ राज्य करेंगे.

7 हज़ार वर्ष का समय पूरा होने पर शैतान उसकी कैद से आज़ाद कर दिया जाएगा.

8 तब वह उन राष्ट्रों को भरमाने निकल पड़ेगा, जो पृथ्वी पर हर जगह बसे हुए हैं—गॉग और मागोग—कि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करे. वे समुद्रतट के रेत कणों के समान अनगिनत हैं.

9 वे सारी पृथ्वी पर छा गए और उन्होंने पवित्र लोगों के शिविर तथा "प्रिय नगरी" को घेर लिया. तभी स्वर्ग से आग बरसी और उस आग ने उन्हें भस्म कर डाला.

10 तब शैतान को, जिसने उनके साथ छल किया था, आग तथा गंधक की झील में फेंक दिया गया, जहां उस हिंसक पशु और झूठे भविष्यवक्ता को भी फेंका गया है. वहां उन्हें अनंत काल के लिए दिन-रात ताड़ना दी जाती रहेगी.

11 तब मैंने सफ़ेद रंग का एक वैभवपूर्ण सिंहासन तथा उन्हें देखा, जो उस पर बैठे हैं; जिनकी उपस्थिति से पृथ्वी व आकाश पलायन कर गए और फिर कभी न देखे गए.

12 तब मैंने सभी मरे हुओं—साधारण और विशेष को सिंहासन के सामने उपस्थित देखा. तब पुस्तकें खोली गईं तथा एक अन्य पुस्तक—जीवन-पुस्तक—भी खोली गई. मरे हुओं का न्याय पुस्तकों में लिखे उनके कामों के अनुसार किया गया.

13 समुद्र ने अपने में समाए हुए मरे लोगों को प्रस्तुत किया. मृत्यु और अधोलोक ने भी अपने में समाए हुए मरे लोगों को प्रस्तुत किया. हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया.

14 मृत्यु तथा अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया. यही है दूसरी मृत्यु—आग की झील.

15 उसे, जिसका नाम जीवन की पुस्तक में न पाया गया, आग की झील में फेंक दिया गया.

Revelation 21:1

1 तब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, अब पहले
का स्वर्ग और पहले की पृथ्वी का अस्तित्व न रहा था. समुद्र
का अस्तित्व भी न रहा था.

2 तब मैंने पवित्र नगरी, नई येरूशलेम को स्वर्ग से, परमेश्वर
की ओर से उतरते हुए देखा. वह अपने वर के लिए खुबसूरती
से सजाई गई वधू के जैसे सजी थी.

3 तब मैंने सिंहासन से एक ऊंचे शब्द में यह कहते सुना,
"देखो! मनुष्यों के बीच में परमेश्वर का निवास! अब परमेश्वर
उनके बीच निवास करेंगे. वे उनकी प्रजा होंगे तथा स्वयं
परमेश्वर उनके बीच होंगे.

4 परमेश्वर उनकी आंखों से हर एक आंसू पोंछ देंगे. अब से
मृत्यु मौजूद न रहेगी. अब न रहेगा विलाप, न रोना और न पीड़ा
क्योंकि जो पहली बातें थी, अब वे न रहीं."

5 उन्होंने, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, कहा, "देखो! अब मैं
नई सृष्टि की रचना कर रहा हूं!" तब उन्होंने मुझे संबोधित
करते हुए कहा, "लिखो, क्योंकि जो कुछ कहा जा रहा है, सच
और विश्वासयोग्य है."

6 तब उन्होंने आगे कहा, "सब पूरा हो चुका! मैं ही अल्फ़ा और
ओमेगा हूं—आदि तथा अंत. मैं उसे, जो प्यासा है, जीवन-जल
के सोतों से मुफ्त में पीने को दूंगा.

7 जो विजयी होगा, उसे यह उत्तराधिकार प्राप्त होगा: मैं
उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरी संतान.

8 किंतु डरपोकों, अविश्वासियों, भ्रष्टों, हत्यारों, व्यभिचारियों,
टोन्हों, मूर्तिपूजकों और सभी झूठ बोलने वालों का स्थान उस
झील में होगा, जो आग तथा गंधक से धधकती रहती है. यही
है दूसरी मृत्यु."

9 तब जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अंतिम विपत्तियों से भरे
सात कटोरे थे, उनमें से एक ने मेरे पास आकर मुझसे कहा,
"आओ, मैं तुम्हें वधू—मेमने की पत्नी दिखाऊं."

10 तब वह मुझे मेरी आत्मा में ध्यानमग्न अवस्था में एक बड़े
पहाड़ के ऊंचे शिखर पर ले गया और मुझे परमेश्वर की ओर
से स्वर्ग से उतरता हुआ पवित्र नगर येरूशलेम दिखाया.

11 परमेश्वर की महिमा से सुसज्जित उसकी आभा पारदर्शी
स्फटिक जैसे बेशकीमती रत्न सूर्यकांत के समान थी.

12 नगर की शहरपनाह ऊंची तथा विशाल थी. उसमें बारह
द्वार थे तथा बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत ठहराए गए थे. उन
द्वारों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे.

13 तीन द्वार पूर्व दिशा की ओर, तीन उत्तर की ओर, तीन
दक्षिण की ओर तथा तीन पश्चिम की ओर थे.

14 नगर की शहरपनाह की बारह नीवें थी. उन पर मेमने के
बारहों प्रेरितों के नाम लिखे थे.

15 जो स्वर्गदूत, मुझे संबोधित कर रहा था, उसके पास नगर,
उसके द्वार तथा उसकी शहरपनाह को मापने के लिए सोने
का एक मापक-दंड था.

16 नगर की संरचना वर्गाकार थी—उसकी लंबाई उसकी
चौड़ाई के बराबर थी. उसने नगर को इस मापदंड से मापा.
नगर 2,220 किलोमीटर लंबा, इतना ही चौड़ा और इतना ही
ऊंचा था.

17 तब उसने शहरपनाह को मापा. वह सामान्य मानवीय
मापदंड के अनुसार पैंसठ मीटर थी. यही माप स्वर्गदूत का भी
था.

18 शहरपनाह सूर्यकांत मणि की तथा नगर शुद्ध सोने का बना
था, जिसकी आभा निर्मल कांच के समान थी.

19 शहरपनाह की नींव हर एक प्रकार के कीमती पत्थरों से
सजायी गयी थी: पहला पत्थर था सूर्यकांत, दूसरा नीलकांत,
तीसरा स्फटिक, चौथा पन्ना

20 पांचवां गोमेद, छठा माणिक्य, सातवां स्वर्णमणि; आठवां
हरितमणि; नवां पुखराज; दसवां चन्द्रकांत; ग्यारहवां धूम्रकांत
और बारहवां नीलम.

21 नगर के बारहों द्वार बारह मोती थे—हर एक द्वार एक पूरा मोती था तथा नगर का प्रधान मार्ग शुद्ध सोने का बना था, जिसकी आभा निर्मल कांच के समान थी.

22 इस नगर में मुझे कोई मंदिर दिखाई न दिया क्योंकि स्वयं सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना इसका मंदिर हैं.

23 नगर को रोशनी देने के लिए न तो सूर्य की ज़रूरत है न चंद्रमा की क्योंकि परमेश्वर का तेज उसे उजियाला देता है तथा स्वयं मेमना इसका दीपक है.

24 राष्ट्र उसकी रोशनी में वास करेंगे तथा पृथ्वी के राजा इसमें अपना वैभव ले आएंगे.

25 दिन की समाप्ति पर नगर द्वार कभी बंद न किए जाएंगे क्योंकि रात यहां कभी होगी ही नहीं.

26 सभी राष्ट्रों का वैभव और आदर इसमें लाया जाएगा.

27 कोई भी अशुद्ध वस्तु इस नगर में न तो प्रवेश हो सकेगी और न ही वह, जिसका स्वभाव लज्जास्पद और बातें झूठ से भरी है, इसमें प्रवेश वे ही कर पाएंगे, जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं.

Revelation 22:1

1 इसके बाद उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो स्फटिक के समान निर्मल-पारदर्शी थी, जो परमेश्वर तथा मेमने के सिंहासन से बहती थी.

2 यह नदी नगर के प्रधान मार्ग से होती हुई बह रही है. नदी के दोनों ओर जीवन के पेड़ है, जिसमें बारह प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं. यह पेड़ हर महीने फल देता है. इस पेड़ की पत्तियों में राष्ट्रों को चंगा करने की क्षमता है.

3 अब से वहां श्रापित कुछ भी न रहेगा. परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा, उनके दास उनकी आराधना करेंगे.

4 वे उनका चेहरा निहारेंगे तथा उनका ही नाम उनके माथे पर लिखा होगा.

5 वहां अब से रात होगी ही नहीं. न तो उन्हें दीपक के प्रकाश की ज़रूरत होगी और न ही सूर्य के प्रकाश की क्योंकि स्वयं प्रभु परमेश्वर उनका उजियाला होगे. वह हमेशा शासन करेंगे.

6 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "जो कुछ अब तक कहा गया है, वह सच और विश्वासयोग्य है. प्रभु ने जो भविष्यद्वक्ताओं को आत्माओं के परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को अपने दासों के पास वह सब प्रकट करने को भेजा है, जिनका जल्द पूरा होना ज़रूरी है."

7 "देखों, मैं जल्द आने पर हूं. धन्य है वह, जो इस अभिलेख की भविष्यवाणी के अनुसार चालचलन करता है."

8 मैं, योहन वही हूं, जिसने स्वयं यह सब सुना और देखा है. यह सब सुनने और देखने पर मैं उस स्वर्गदूत को दंडवत करने उसके चरणों पर गिर पड़ा, जिसने मुझे यह सब दिखाया था,

9 किंतु स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "देख ऐसा मत करो! मैं तो तुम्हारे, तुम्हारे भाई भविष्यद्वक्ताओं तथा इस अभिलेख के पालन करनेवालों के समान ही परमेश्वर का दास हूं. दंडवत परमेश्वर को करो."

10 तब उसने आगे कहा, "इस अभिलेख की भविष्यवाणी को मोहर नहीं लगाना, क्योंकि इसके पूरा होने का समय निकट है.

11 जो दुराचारी है, वह दुराचार में लीन रहे; जो पापी है, वह पापी बना रहे; जो धर्मी है, वह धार्मिकता का स्वभाव करे तथा जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे."

12 "देखों! मैं जल्द आने पर हूं! हर एक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार जो बदला दिया जाएगा, वह मैं अपने साथ ला रहा हूं.

13 मैं ही अल्फ़ा और ओमेगा हूं, पहला तथा अंतिम, आदि तथा अंत.

14 “धन्य हैं वे, जिन्होंने अपने वस्त्र धो लिए हैं कि वे द्वार से नगर
में प्रवेश कर सकें और जीवन के पेड़ का फल प्राप्त कर सकें.

15 कुत्ते, टोन्हे, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक तथा झूठ के
समर्थक या वे, जो झूठ गढ़ते हैं, बाहर ही रह जाएंगे.

16 “मैं, येशु, मैंने कलीसियाओं के हित में अपने स्वर्गदूत को
इस घटनाक्रम के प्रकाशन के लिए तुम सबके पास गवाह के
रूप में भेजा है. मैं ही दावीद का वंशमूल और वंशज हूं, और
भोर का चमकता हुआ तारा.”

17 आत्मा तथा वधू, दोनों ही की विनती है, “आइए!” जो सुन
रहा है, वह भी कहे, “आइए!” वह, जो प्यासा है, आए; कोई भी,
जो अभिलाषी है, जीवन का जल मुफ़्त में पिए.

18 मैं हर एक को, जो इस अभिलेख की भविष्यवाणी को सुनता
है, चेतावनी देता हूं: यदि कोई इसमें कुछ भी जोड़ता है, तो
परमेश्वर उसकी विपत्तियों को, जिनका वर्णन इस अभिलेख में
है, बढ़ा देंगे.

19 यदि कोई भविष्यवाणी के इस अभिलेख में से कुछ भी
निकालता है तो परमेश्वर जीवन के पेड़ तथा पवित्र नगर में से,
जिनका वर्णन इस अभिलेख में है, उसके भाग से उसे दूर कर
देंगे.

20 वह, जो इस घटनाक्रम के प्रत्यक्षदर्शी हैं, कहते हैं, “निश्चित
ही मैं शीघ्र आने पर हूं.” आमेन! आइए, प्रभु येशु!

21 प्रभु येशु का अनुग्रह सब पर बना रहे. आमेन.